



## EXPAND THE VALUE OF CLEANLINESS THROUGH EDUCATION

## शिक्षा के माध्यम से स्वच्छता के मूल्यों का विस्तार

Dr. Narendrakumar S. Pal

Assistant Teacher, Bharkunda Primary School, Kathlal, Kheda.

## ABSTRACT

In the present paper researcher tried to explain in detail about the importance of cleanliness and other aspects related to it. Researcher discussed about the present status of cleanliness in India, awareness in cleanliness in the other countries and in India, efforts made by India for cleanliness and how cleanliness is related to education.

## प्रस्तावना:

भारत एक लोकतान्त्रिक देश है, जिसमें विभिन्न संस्कृतियों का समन्वय बेहतर तरीके से स्थापित हुआ है। विभिन्न संस्कृतियों के साथ साथ सांस्कृतिक मूल्यों का भी विकास, विस्तार और आदान प्रदान होता रहता है। लेकिन आज भी सांस्कृतिक मूल्यों के साथ साथ सामाजिक मूल्यों की स्थापना होने के बावजूत सामाजिक परिवेश में मूल्यों का अनुपालन कम होता होता देखा जा सकता है। शिक्षित लोग भी कई बार मूल्यों का सामाजिक परिवेश में अनुपालन नहीं करते हैं, जिसकी वजह से अशिक्षित लोगो से मूल्यों के अनुपालन में उम्मीद करना गलत है। आज दुनिया की नजरे भारत पर टिकी है, लेकिन भारत में स्वच्छता की और लोगो का झुकाव काम होने की वजह से कई बार देश - दुनिया में काफी आलोचना का सामना भी करना पड़ता है। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के स्वच्छता को मिशन बनाकर इस और कदम बढ़ाया है। इस स्वच्छता के मूल्यों को समाज में सुदृढ़ रूप से स्थापित करने हेतु कुछ सुझाव इस आर्टिकल में प्रस्तुत है।

**“घर – समाज को रखो साफ, भविष्य नहीं करेगा वरना माफ़.”**

## स्वच्छता एक मूल्य:

स्वच्छता एक कार्य न समझते हुए सामाजिक परिवेश में व्यक्तिगत मूल्यों की तरह लेना उचित है। व्यक्तिगत रूप से स्वच्छता के मूल्यों का सिंचन बचपन से मानस मन में उतरना जरूरी है। यदि बचपन में बालक मन और मस्तिष्क में स्वच्छता के बारे में उचित वातावरण के साथ साथ उनके फायदे और अच्छाईओ के बारे में समझाया जाये तो आने वाले भविष्य में स्वच्छता को लेकर कोई मिशन शुरू करने की जरूरत ही नहीं रहेगी।

आज भारत में ही नहीं पुरे विश्व में मानव मूल्यों में गिरावट देखने को मिल रही है। ऐसे में विभिन्न मूल्यों के विकास में स्वच्छता का मूल्य कुछ इस प्रकार से दिया जाना चाहिए की सभी लोग गंदकी के प्रति नफरत करने लगे। जिससे स्वतः ही स्वच्छ पर्यावरण और आसपास सफाई होती रहे। गंदे कूड़े, कहीं भी सार्वजनिक स्थान पर थूकना, पान - गुटका, मसाले इत्यादि खाकर थूकना, कहीं भी किसी भी स्थान पर किसी भी तरह का कचरा डालना इत्यादि चीजों को करने से मन में संकोच हो, इस प्रकार का वातावरण निर्मित करके, सबकी सोच बदलने का प्रयास करना चाहिए।

**“क्लीन सिटी, ग्रीन सिटी, यही मेरी है ड्रीम सिटी.”**

## पश्चिमी देशों की स्वच्छता के प्रति सोच और व्यवस्था:

अमेरिका, यूरोप और अन्य पश्चिमी देशों की स्वच्छता के मूल्यों के प्रति जागरूकता एवं शिक्षण में स्वच्छता के मूल्यों को प्राथमिकता देना ही उनकी कामयाबी है। आज पश्चिमी देशों में बालक जन्म से देखते हैं और अनुभव करते हैं की उनके आसपास के लोग अपने आसपास के सार्वजनिक स्थान और धरोहरों को स्वच्छ रखते और पूरी तरह से अपने पर्यावरण को साफ सुधरा रखने का प्रयास करते हैं।

यह सब देखकर जन्म से बालक जैसे जैसे बड़े होते जाते हैं, स्वतः ही स्वच्छता के मूल्यों को जानके आपने में उतार लेते हैं। साथ ही बालक अपने शिक्षण ग्रहण करने के समय स्वच्छता के मूल्यों, फायदे और जीवन को बेहतर रखने के लिए स्वच्छता की दिशा पर करने वाले कार्यों से अवगत करवाते रहते हैं। जिनसे बालको को शैक्षिक शिक्षण के साथ व्यावहारिक शिक्षा भी पुरे तरह से अपने में उतारने का अवसर स्वतः ही प्राप्त होता है। साथ साथ सफाई के प्रति उदासीन होने पर वहा के देशों में बनाये गए कड़े नियमों और दंड के प्रावधान के तहत एक सुव्यवस्थित व्यवस्था का परिचय भी करवाया जाता है। जिससे गलती से भी अपने पर्यावरण के प्रति उदासीनता के लिए दंडात्मक कार्यवाही से डराया भी जाता है।

इस तरह के सुव्यवस्थित शिक्षिक, पर्यावरणीय और सामाजिक परिवेशों में पलने बढ़ने वाले पश्चिमी देशों के बच्चों और नागरिकों में स्वतः ही स्वच्छता के मूल्यों का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। साथ साथ स्वच्छता के मूल्यों का सही ढंग से सही दिशा में अनुपालन भी देखा जा सकता है। इन सब वजहों से कई पश्चिमी देशों का स्वच्छता के बारे में भारत से काफी आगे स्थान देखा जा सकता है।

## भारत में स्वच्छता के सन्दर्भ में करने जैसे प्रयास:

भारत में वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रयासों से आज भारत में स्वच्छता को लेकर सभी वर्गों में काफी जागरूकता देखी जा सकती है। सभी वर्गों और आयु के लोग आपने आसपास के पर्यावरण को लेकर स्वच्छता रखते देखे जा सकते हैं। लेकिन कई बार इन प्रयासों में कुछ अन्य प्रयासों की आवश्यकता रहती है, जिनसे भविष्य में स्वच्छता को लेके अलग से कोई भी मिशन चलने की जरूरत ही न रहे। इस दिशा में आज ही ऐसे प्रयास किये जाने चाहिए की आने वाली सभी पीढ़ियों को स्वच्छता के मूल्यों को जन्म से ही उनमें देखा जा सके।

**“स्वच्छता अपनाओ, समाज में खुशियाँ लाओ.”**

इन प्रयासों के तहत जरूरी है की वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में कुछ बदलाव करा जाए। जिससे की बालक शुरुआती शिक्षा ग्रहण करते समय से ही स्वच्छता को समाज सके और स्वच्छता के प्रति मूल्य सम्बंधित ज्ञान प्राप्त कर सके। स्कूल शुरू करते समय ही विद्यार्थियों को आपने स्कूल के पर्यावरण, पाठ्यक्रम, शिक्षकों के व्यवहार से इन मूल्यों से चुपचाप से गहराई में जाके अनुभव कर सके और पालन कर सके। साथ साथ शिक्षा और स्वच्छता को लेकर कुछ दंडात्मक या अन्य सजा का निर्माण करना चाहिए की बच्चों को उस दंड में भी स्वच्छता का ज्ञान प्राप्त हो सके। यदि कोई आपने आसपास किसी भी प्रकार की गंदकी फैलता है, तो उसे भविष्य में ऐसा करने से स्वतः ही खुद को रोक सके ऐसा सचेतनशील नागरिक बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। कई बार कठिन दंड देने के परिणाम स्वरूप आखिर में अच्छा सुधरा देखा जाए तो इस वजह से दंड को कुछ कठिन भी करा जाए तो उचित है। साथ साथ बच्चों को सफाई के प्रति किये गए अच्छे प्रयासों और योगदानों के लिए पुरस्कृत भी करना अतिआवश्यक है। ऐसा करने से अच्छे कार्यों से किये गए अच्छे पुरस्कारों की अभिलाषा भी बालको के अंतर्मन में स्वयं शिष्ट और अच्छा नागरिक बना देती है। स्वच्छता और पुरस्कार से बच्चा कब स्वच्छता के मूल्यों को अपने में उतार लेता है की ये कुछ समय बाद बालको में देखे जाने वाले अनुपालन से देखा जा सकता है।

पाठ्यक्रम में स्वच्छता से जुड़े पहलुओं के समिश्रण से उम्र बढ़ने के साथ साथ शिक्षा में हुए बदलाव और मूल्यों के उच्च स्तर पर ले जाने में सहायता मिलती है। पाठ्यक्रम में द्वारा शिक्षा के साथ साथ स्वच्छता के मूल्यों को क्रमबद्ध तरीके से बालको में उतारा जा सकता है।

स्वच्छ स्कूल, स्वच्छ गाँव, स्वच्छ पर्यावरण जैसे कई प्रोजेक्टों का निर्माण करवाना चाहिए। ज्यादा से ज्यादा लोगो तक स्वच्छता के मूल्यों को पहोचाना और समझाना और अनुपालन करवाने जैसे कई कार्यक्रमों का निर्माण करना जरूरी है। बच्चे सामूहिक भागीदारी से और अपने आसपास के लोगो को भी समझने के प्रयासों से अपने अंदर के श्रेष्ठ प्रयत्नों के जरिये सफलता प्राप्त करने का प्रयास करेंगे। जिनसे बालको के मन और सोच के साथ साथ आदतों को बदलते हुए आसपास के पर्यावरण को भी स्वच्छ बनाया जा सकता है। साथ ही इन सब स्वच्छता के प्रयासों को लोगो के व्यवस्थित सुचारु कार्य होता रहे उसके लिए लोगो की टीम बनाने की व्यवस्था का भी सुझाव देना चाहिए।

शिक्षकों को भी अपने अचार - विचार और व्यवहार से स्वच्छता के मूल्यों का दर्शन विद्यार्थियों

को करवाते रहना अनिवार्य है। बालको के मन पर स्वच्छता को लेकर अपने शिक्षकों को आदर्श माने ऐसे प्रयासों और व्यवहार करने पर शिक्षकों को सूचित किया जाना चाहिए।

स्वच्छता के मूल्यों को इस प्रकार से समझदारी से सामाजिक वर्गों तक पहुंचाया जाए तो अवश्य ही भारत विश्व में स्वच्छता के क्षेत्र में प्रथम स्थान प्राप्त कर सकता है। यह कार्य कठिन नहीं है, पर जरूरत है तो उचित दिशा में सही प्रयासों के साथ सफलता मिलना तय है। स्वच्छता के मूल्यों को भारत के सभी नागरिकों तक बखूबी पहुंचाया जाए और इसका अनुपालन करवाया जाए तो आने वाले कल में इस मूल्यों के द्वारा स्वच्छ भारत का निर्माण हो सकता है।

स्वच्छता पर हिन्दी कविता :  
शहर-गली में चर्चा है,  
स्वच्छ भारत अभियान की!

आओ बच्चों तुम्हें बताएं,  
महत्ता कचरा दान की।

बिना प्रबंधन बीमारी,  
फैले जो दुश्मन जान की।

उचित प्रबंधन खाद बनाता,  
करता मदद किसान की।

शहर-गली में चर्चा है,  
स्वच्छ भारत अभियान की!

कपड़े की झोली विकल्प है  
पॉलीथिन की थैली की।

लहर चल रही सभी ओर अब,  
मोदी के अभियान की!

शहर-गली में चर्चा है,  
स्वच्छ भारत अभियान की!

तुम्हारे कंधों पर निर्भर है,  
सफलता इस अभियान की!

शहर-गली में चर्चा है,  
स्वच्छ भारत अभियान की!

सारांश:

**“विकसित राष्ट्र की हो कल्पना, अब हमें है स्वच्छ बनना.”**

स्वच्छ भारत के निर्माण में सभी वर्गों और आयु के लोगों के पूर्ण भागीदारी होना आवश्यक है शिक्षा ही एकमात्र ऐसा उचित माध्यम है जिसके जरिये स्वच्छता के मूल्यों को सभी लोगों तक पहुंचाया जाए और ऐसे पहुंचाया जाए की आने वाली सभी पीढ़िया इन मूल्यों को स्वतः ही ग्रहण कर सकें और देश की स्वच्छता में अपना योगदान १००% दे सकें।

संग्रह:

1. <http://www.nayichetana.com/2016/10/top-31-cleanliness-slogan-hindi.html>
2. [http://hindi.webdunia.com/kids-poems/swachh-bharat-117021300056\\_1.html](http://hindi.webdunia.com/kids-poems/swachh-bharat-117021300056_1.html)